शोध परिचय

भूमिका-

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में महिलाओं की भूमिका पर बात करने से पहले यह जरूरी है कि कांग्रेस की मूल प्रकृति एवं सिद्धांतों को अवश्य जान लिया जाए। कांग्रेस सिर्फ एक राजनीतिक संगठन मात्र न होकर एक राष्ट्रीय आंदोलन अधिक था। और राष्ट्र के शुभचिंतकों एवं निर्माताओं के लिए एक उचित, वृहत राजनीतिक मंच था। राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए एवं प्रशासन में भागीदारी के उद्देश्य से कांग्रेस का गठन किया गया था। सबसे पहले तो भारत को एक राष्ट्र के रूप में गठित करना था और उसके लिए यह जरूरी था कि अधिक से अधिक क्षेत्रों के लोग एकत्रित हों और राष्ट्रहित में वार्तालाप हो सके। राष्ट्र की आवश्यकताओं और समस्याओं को देखते हुए संवैधानिक सुधारों की मांग की जाए और प्रशासनिक तब्दीलियों के माध्यम से राष्ट्र की परिस्थितियों को बेहतर किया जा सके। साथ ही देश के लोगों को राष्ट्रीय चेतना और राष्ट्र भावना से अवगत कराया जाए सके। लोगों को शिक्षित करना भी बहुत जरूरी था और सबसे जरूरी था लोगों को मानसिक रुप से सशक्त बनाना।

कांग्रेस ने यह तय किया कि सर्वप्रथम महत्वपूर्ण एवं राष्ट्रीय समस्याओं को लेकर ही चला जाए। कांग्रेस मुख्यत: राजनीतिक मुद्दों को लेकर ही काम करती थी, इसी कारण कांग्रेस ने सामाजिक सुधार का सवाल नहीं उठाया इसके दूसरे अधिवेशन में ही कांग्रेस अध्यक्ष दादा भाई नौरोजी ने कहा था कि "राष्ट्रीय कांग्रेस को अपने आपको सिर्फ उन सवालों तक ही सीमित रखना चाहिए जो सवाल पूरे राष्ट्र से जुड़े हों और जिन सवालों पर सीधी भागीदारी की गुंजाइश हो। इसलिए सामाजिक सुधारों पर चर्चा करने के लिए कांग्रेस उचित मंच नहीं थी। संभवत: उसी के चलते महिलाओं की समस्याएं दरकिनार हो गईं और उनकी स्थिति में सुधार के प्रयास कांग्रेस के भीतर नहीं किए जा सके। जैसे प्रतिनिधि शिक्षा, बाल विवाह, बहुपत्नी

विवाह प्रथा और विधवा आदि मुद्दे कांग्रेस से अछूते रहे। फिर भी कांग्रेस को महिलाओं का सहयोग बराबर मिलता रहा।

राजनीतिक चेतना जगाने और जनमत तैयार करने का कार्य सबसे पहले शिक्षित तहकों से शुरू किया गया उसके बाकी तबकों में। इसका तात्कालिक उद्देश्य जनता को लगातार राजनीतिक गतिविधियों में शरीक करना था। वह जनता की तात्कालिक कठिनाइयों को दूर करने के लिए किसी संघर्ष में फसना नहीं चाहते थी। अपने समय की सशक्त सत्ता के खिलाफ एक संगठित राजनीतिक विरोध को जन्म देने के लिए अपने अंदर आत्मविश्वास और दृढ़ता पैदा करनी थी।

भारत के एक राष्ट्र बनने एवं आजादी की ओर बढ़ने की प्रक्रिया में वृहद स्तर के कार्यक्रम चलाए गए, जिनमें कांग्रेस केंद्रीय भूमिका में रही। शीघ्र ही उसे भारतीय राष्ट्र की आवाज माना जाने लगा, किंतु कांग्रेस के अलावा और कई ऐसे संगठन थे जो राष्ट्र निर्माण कार्य में लगे हुए थे जिनके अंतर्गत महिलाएं प्रशिक्षित होने के बाद कांग्रेस में अपना योगदान दे रहीं थीं। उदाहरण के लिए देश सेविका संघ, राष्ट्रीय स्त्री संघ, गांधी सेवा सेना, महिला राष्ट्रीय संघ एवं नारी सत्याग्रह समिति आदि। इसी तरह कांग्रेस में महिलाओं की संख्या बढ़ती गई एवं गांधी के आगमन से राष्ट्रीय आंदोलन को एक नई दिशा मिली उन्होंने महिलाओं की भागीदारी पर पूरा जोर दिया। उन्होंने महिलाओं को विरोध प्रदर्शन के लिए अनमोल अमिट शक्ति के रुप में पहचाना। गांधी के वक्तव्यों से समाज में परिवर्तन शुरू हुआ, महिलाओं का दैनिक स्वरूप बदला। उसके बाद महिलाओं ने भी आंदोलनों में जोरदार भागीदारी की और कांग्रेस तथा राष्ट्रीय आंदोलनों में अपने महत्वपूर्ण योगदान से इतिहास को गौरवमयी बनाया।

साहित्यक पनुरावलोकन-

1. "Women in colonial India By- Geraldine Forbes

इस पुस्तक में "The Politics of Respectablity Indian Women and the Indian National Congress" अध्याय में महलाओं की भागीदारी का वणन है, किन्तु सीमित है। फ़ोर्ब्स बताती हैं कि कांग्रेस के बम्बई अधिवेशन (1888) में पहली बार दस महलाएँ उपिस्थत हुई थीं। जो सवर्ण जाति की और बहुत अच्छे पढ़े-लिखे खानदान से रहती हैं। जिसमें महाराष्ट्र की पंडिता रमाबाई, बंगाल की स्वर्ण कुमारी देवी और कादंबिनी गांगुली होती हैं। आगे चलकर धीरे-धीरे महिलाओं की संख्या बढ़ती जाती है। गाँधी जी के आगमन और उनके प्रयास से महलाओं का सड़क पर आना भी इनके लेखन का हिस्सा है। एक संपूर्ण राष्ट्रीय आंदोलन के तहत महिलाओं के योगदान को दिखाया गया है। किंतु उनकी भागीदारी का स्पष्ट मूल्यांकन नहीं किया गया है।

2. "Women in Modern India" By- Geraldine Forbes

इस पुस्तक में महिलाओं के संगठनों पर बात की गई है। महिलाओं द्वारा महिलाओं के अधिकार की मांग को लेकर जो आंदोलन हुए उनकी चर्चा इसमें है।इस पुस्तक में राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं सहयोग को दिखाया गया है। इसमें कई नयी महलाओं के नाम मिलते हैं, जिनके योगदान महत्वपूर्ण हैं। यह पुस्तक बहुत ही महत्वपूर्ण है इसमें बहुत ही रोचक तरीके से लिखने का प्रयास किया गया है। लेकिन पुस्तक बहुत लंबे समय को लेकर चलती है जिस कारण बहुत से छोटे-छोटे महत्वपूर्ण तथ्य छूट जाते हैं।

3. "Women in Indian National Congress" (1921-1931) By- Rajan Mahan

तक महिलाओं को केंद्र में रखकर कांग्रेस का लिखी पुस्तक है। इस पुस्तक में भी पारंपरिक इतिहास लेखन के ढंग से ही लिखा गया है। इसमें भी की स्थापना उसकी प्रगति राष्ट्रवाद, राष्टआंदोलन की प्रगति

का वर्णन है बंग बंग एवं स्वदेशी आंदोलन में महिलाओं की भूमिका, फिर असहयोग आंदोलन आंदोलन। फर्क यह है कि इस पुस्तक में महिलाओं के नाम अधिक मिल जाते हैं और उनके छोटे छोटे कार्य को अहमियत दी गई है। एक अध्याय में गांधी के टेस्ट कौन से महिला को 'अबला' नहीं 'सबला' के रूप में व्यक्त किया गया है। 1920 के दशक में उभरे महलाओं के आंदोलन एवं कांग्रेस के विस्तार के साथ महिलाओं के प्रमुख मुद्दों को लेकर एक अध्याय है। इस ने बताया गया है कि किस तरह महिलाएं कि एकजुट हो रही थीं और किस तरह उनके संगठन उभर रहे थे। और इस पुस्तक में उन मत भेज दूं एवं बर्ताव को दिखाया गया है जो महिलाओं पर केंद्रित थीं।मुक्ता गांधी के विचार को रखा गया है साथ ही गांधी के प्रयास को दर्शाया गया है कि किस तरह उन्होंने मुक्त मानसिक तौर पर महिलाओं को सफल बनाया मानी लोगों को अपने विचार से सहमत कराया।पुस्तक में केवल 1931 तक का विवरण है इसने या पुस्तक बहुत कुछ होने के बावजूद भी अधूरी है।

4. "Women in The Indian National Movement": Unseen Faces and Unheard Voices (1930-1942) By- Suruchi Thapar

इस पुस्तक में नए चेहरे खोजने का प्रयास किया गया है, जो कि आजादी की लड़ाई में अच्छी भूमिका निभाने के बावजूद छिपे रहे और जिन्हें इतिहास में जगह नहीं मिली। लेकिन इस पुस्तक में बहुत कम हे समय को लिया गया है।

5. "भारत का स्वतंत्रता संघर्ष" - विपिन चंद्र

इस पुस्तक में दो अध्यायों में कांग्रेस पर बात की गई है। एक में कांग्रेस का मिथक एवं दूसरे में कांग्रेस का सच बताया गया है किंतु कांग्रेस में महिलाओं के योगदान, महिलाओं के मुद्दे, महिलाओं के लिए कांग्रेस की अहमियत, महिलाएं कितना कांग्रेस के लिए सार्थक रहीं, इस बात की कोई चर्चा नहीं है। या इस बात की कोई चर्चा नहीं मिलती कि कांग्रेस के पास महिलाओं संबंधी कोई उद्देश्य, कार्यक्रम या

नीतियां थीं या नहीं थीं। इसमें बताया गया है कि कांग्रेस सिर्फ राष्ट्रीय, राजनीतिक मुद्दों पर बात करती थी। इनके अनुसार शायद महिलाओं संबंधी मुद्दे या सामाजिक समस्या संबंधी मुद्दे राष्ट्रीय मुद्दे नहीं थे। लेखा से महिलाएं बाहर ही हैं जैसे कि वो राष्ट्र का हिस्सा नहीं थीं। आधुनिक भारत का इतिहास लिखने वाले महान इतिहासकार राष्ट्रीय आंदोलन में, राष्ट्रीय कांग्रेस में महिलाओं की भूमिका पर लिखना जरुरी नहीं समझते।

6. "कांग्रेस का इतिहास" – पट्टाभि सीतारमैय्या

भारतीय इतिहास का या महान ग्रंथ तीन खंड में है जिसमें कांग्रेस का समूचा इतिहास है किंतु उसमें महिलाएं कहीं नहीं है बहुत ही प्रतिष्ठित महिलाओं के नाम मिलते हैं। जैसे- एनी बेसेंट, सरोजिनी नायडू, विजयलक्ष्मी पंडित आदि। इस तरह के लखेन से उस समय के समाज की सोच तथा समाज एवं राष्ट्र के लिए महलाओं की महत्ता का पता चलता है। इतिहास तो सिर्फ विशिष्टों का लिखा जाता है, और यह बात इस पुस्तक से स्पष्ट तो जाती है।

7. "भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का इतिहास" – नरेश कुमार शर्मा

यह पुस्तक मूलत: कांग्रेस का इतिहास प्रस्तुत करती है। इसमें एक अध्याय महिलाओं को समर्पित है, लेकिन इसमें भी कुछ नया नहीं है। इसमें सिर्फ चर्चित महिलाओं को एक साथ रख दिया गया, उनके जीवन परिचय को उनके राजनीति कार्यों के साथ दिखाया गया है। इस पुस्तक में भी बहुत अभाव है जिसे पूरा किया जा सकता था, किंतु ऐसा नहीं किया गय। क्योंकि लेखक की नजर में इतना पर्याप्त है उनके अनुसार कांग्रेस में महिलाओं की इतनी ही जगह बनती है या इतनी ही महिलाएं इतिहास की पात्र हैं।

8. "स्त्री संघर्ष का इतिहास" – राधा कुमार

यह पुस्तक स्त्रियों के इतिहास की पहली बेहतरीन पुस्तक है। इसमें 19वीं शताब्दी से 20वीं शताब्दी के आखिर तक का इतिहास शामिल है। यह पुस्तक स्त्री के संघर्ष को समर्पित है, इसमें महिलाओं के

अधिकार को लेकर किए गए आंदोलन शामिल है। नायक की भूमिका में आने वाली महिलाओं को उनकी उपलब्धियों के साथ चिन्हित किया गया है। संवैधानिक सुधारों पर बात की गई है एवं इन सुधारों के लिए महिलाओं ने जो प्रयास किए, उनको बखूबी दिखाया गया है। बहुत से महिला संगठनों को उनकी महत्ता के साथ उनके संघर्षों को दिखाया गया है।

9. "आधुनिक भारत का इतिहास" (1885-1947) – सुमित सरकार

यह पुस्तक छोटी बड़ी सभी घटनाओं का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक बहुत ही गहन अध्यन का परिणाम है, किंतु महिलाओं संबंधी जानकारी बहुत कम है। कांग्रेस संबंधी विवरण बहुत कम है किंतु कांग्रेस के अलावा अन्य संगठनों को उद्धृत किया गया है। और यह पुस्तक भाषा के मामले में पेचीदा होने के नाते तथा अत्यधिक तथ्य होने के कारण उलझा भी देती है।

10. "भारतीय वतं ता आंदोलन का इतहास" खंड-1,2 – ताराचंद

इस इस पुस्तक में कांग्रेस की उदय प्रभात की गई है उसकी संरचना कार्यमुक्त रियाल आप पर संक्षिप्त विवरण है। ब्रिटिश निति से उसका संबंध एवं प्रशासन से दखल का जिक्र है। किंतु महिलाओं के संदर्भ में बहुत कम है।

11. "स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास" – शशिप्रभा श्रीवास्तव

इसमें भी कांग्रेस की स्थापना का छोटा ज़िक्र है। किंतु स्वतंत्रता के विभिन्न आंदोलनों के मूल तत्वों को दिखाने का प्रयास किया गया है। यह पुस्तक भी इतिहास लेखन की परंपराओं से बंधी हुई है। यह भी महिलाओं पर अधिक ध्यान केंद्रित नहीं करती।

12. "भारतीय स्वतंत्रता की कहानी" – सीता श्रीवास्तव

इस पुस्तक में भी कांग्रेस की स्थापना, एनी बेसेंट के आंदोलन, स्वतंत्रता प्राप्ति तक के विभिन्न

चरणों एवं आंदोलनों की मुख्य-मुख्य घटना आदि हैं।

13. "भारतीय राष्ट्रीय अन्दोलन एवं राजनीतक अंतर्द्वंद्व" – दनेश कुमार

इस पुस्तक में कांग्रेस के स्वरुप, कांग्रेस की गतिविधियों एवं आंतरिक मतभेद पर प्रकाश डाला गया है।

14. "आजादी के दस्तावेज" भारतीय वतं ता आंदोलन,2

- नेताजी सुभाष चंद्र बोस, अजय घोष, एल. नटराज, कैलाश चंद्र जैनपुष्प, रणधीर सिंह

इस पुस्तक में कांग्रेस को बाहर से देखा गया है, इसमें अन्य संगठनों एवं दलों के सदस्यों की दलीलों तथा उनके नजरिए से कांग्रेस की गतिविधियों को चिन्हित किया गया है।

15. "भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास" ब्रिटिश साम्राज्यवाद बनाम भारतीय राष्ट्रवाद - अशोक गांगुली

इस पुस्तक में भारत के विभिन्न विद्रोह का वर्णन है। उसके बाद कांग्रेस की स्थापना, कांग्रेस में विभाजन (नरम एवं गरम दल), असहयोग आंदोलन। यह पुस्तक भी कुछ खास प्रस्थापनाएं नहीं गढ़ती न ही भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी की कोई खास चर्चा करती है। कांग्रेस के विवरण में तो महिलाएं गायब ही हैं।

16. "भारत में ब्रिटिश राज के अंतिम दिन" - लिओनार्ड मोसले

यह पुस्तक कुछ ऐसे अद्भुत तथ्य सामने लाती है। जो भारतीय इतिहासकारों द्वारा छुपाए गए हैं। आखिरी दिनों मे ब्रिटिशों के साथ भारतीयों के संबंधों एवं राजनीतिक लड़ाई का वैचारिक विवरण है।

17. "Women Leaders in Political Parties":

Patterns of Recuritment, Perceptions and Performance in Andhra Pradesh (Ph.D.),1995

By- Chall Hymavathi, Department of political Science, University of Hyderabad

इस शोध में बहुत सी नयी महलाओं के नाम मलते हैं, जो भारतीय राजनीत मैं सक्रिय थी एवं कांग्रेस के लिए काम कर रहे थे इस में पता चलता है कि महिला दिखाई भारतीय विधायिका के लिए नहीं छूना चाहता था लेयुक्त प्रांत कांग्रेस समिति के सदस्य थीं। उन्होंने 1931 में महत्वपूर्ण निर्णय लेने में भी सहयोग किया। इस शोध में अलग-अलग क्षेत्र में सक्रिय महिलाओं को दिखाया गया है।

18. "Gandhi As a Political Communicator" By- Divya P. Joshi (Ph.D.),1996

Department of Political science, S.N.D.T. University, Mumbai

इस शोध में गांधी की उपलब्धियों और राष्ट्र के लिए उनके सहयोग प्रबल दिया गया है। उन्होंने कौन सी तकनीकों का इस्तेमाल किया, किस तरह देश की जनता/महिलाओं को राष्ट्र के प्रति समर्पित करने के लिए प्रोत्साहित किया, जनता को एकजुट करने के लिए मौलिक विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए लेखन-कला को प्रोत्साहन दिया। गांधी ने सत्य, अहिंसा, असहयोग आदि में महिलाओं की भागीदारी तथा संप्रेषण को महत्त दिया, जिसका अध्ययन इसमें है।

18. "Indian Nantional Congress and The Depressed Classes" (1921-1947)

By- Sarver Kumar Chahal (Ph.D.),1999

Department of History, Maharishi Dayanand University, Rohtak

इस शोध में दलितों को ध्यान में रखते हुए अध्ययन किया गया है। इसमें कांग्रेस की नीतियों उद्देश्यों, कार्यक्रमों एवं उपलब्धियों तथा भारत को कांग्रेस की देन पर बात की गई है। जिस तरह दलितों के लिए राजनीतिक भागीदारी का कोई विकल्प नहीं था, उसी तरह संपन्न/उच्च वर्ग की महिलाओं को छोड़कर

अन्य महिलाओं के लिए राजनैतिक मार्ग बंद थे। इस शोध में विभिन्न विरोधी विचारों के अंतर्संबंधों को दिखाया गया है।

शोध की प्रासंगिकता-

भारत के स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण कार्य था, राजनैतिक कार्यों को धीरे-धीरे स्वाधीन करना। जिसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई कांग्रेस ने और जब कभी आज़ादी के संघर्ष का इतिहास लिखा जाएगा या याद किया जाएगा तो कांग्रेस का ज़िक्र आएगा। कांग्रेस को योगदान देने या कांग्रेस के माध्यम से राष्ट्र हित में काम करने वाले लोगों को याद किया जाएगा, समय-समय पर उन ऐतिहासिक प्रसंगों से प्रेरणा भी ली जाएगी। किन्तु दुर्भाग्य यह होगा कि मौजूद इतिहास ग्रंथ महिलाओं के लिए अच्छे प्रेरणा स्रोत साबित नहीं हो पाएंगे। समाज, स्त्री एवं पुरुष दोनों के सहयोग से बनता है तो इतिहास में भी महिलाओं को बराबर जगह मिलनी चाहिए।

भारत की स्वाधीनता के लिए जो भी आन्दोलन हुए उनमें महिलाओं ने खुलकर भाग लिया एवं अपना सब कुछ राष्ट्र को समर्पित कर दिया। असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन एवं भारत छोड़ो आन्दोलन में तो महिलाओं का पूरा हुजूम ही दिखता है, जिसका पुस्तकों में ज़िक्र मात्र मिलता है। लेकिन किस तरह महिलाओं की महत्ता कम हो गई पता नहीं चलता, क्यों भारतीय इतिहास से महिलाएं गायब हुईं और कैसे उनको राजनितिक परिवेश से दूर कर दिया गया, इसका कोई हिसाब नहीं है। भारत छोड़ो आन्दोलन में जो भारी संख्या महिलाओं की दिखी थी, उस पहचानने की जरूरत है. कांग्रेस के पुरुष प्रतिभागियों/ प्रतिनिधियों की तरह अधिक से अधिक महिला पतिभागियों को खोजने की आवश्यकता है। यह शोध निश्चित ही इतिहास लेखन के कार्य में महत्वपूर्ण रहेगा, जो कि भविष्य में आन्दोलन के लिए या राजनैतिक क्षेत्र में महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बन सकता है।

शोध प्रश्न-

1. शुरुआती कांग्रेस में किस तरह, कौन सी महिलाएं शामिल हुई और क्यों?
2. महिलाओं की भागीदारी के क्या-क्या कार्यक्रम थे, या उन्हें किन भूमिकाओं में रखा गया?
3. महिलाओं ने कांग्रेस के लिए क्या-क्या किया, किस तरह उनहोंने कांग्रेस के मूल्यों को आत्मसात किया एवं कैसे कांग्रेस के उद्देश्यों को सफल बनाया?
4. क्या कांग्रेस महिलाओं को उनकी प्रतिभा के मुताबिक उचित मंच दे पायी?
5. आज़ादी के समय महिलाओं को क्यों मुख्यधारा से एवं बाद में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से गायब कर दिया गया?

शोध के उद्देश्य-

1. कांग्रेस ने महिलाओं की योगदान को सामने लाकर राजनैतिक पटल पर महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत खोजना।
2. कांग्रेस के इतिहास में जगह पा सकने वाली अधिक से अधिक महिलाओं को ऐतिहासिक पहचान दिलाना।
3. परंपरागत इतिहास लेखन की विधाओं से अलग नारीवादी दृष्टिकोण एवं अंतरअनुशासनिक अध्ययन पद्धति को अपनाते हुए छुपे तथ्यों को सामने लाना।

शोध प्रविधि-

यह शोध मूलतः ऐतिहासिक स्रोतों पर आधारित है। इसमें विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। जिसमें ऐतिहासिक ग्रंथों/दस्तावेजों का इस्तेमाल किया गया है। ऐतिहासिक दृष्टि से तथ्यों को विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। साथ ही नारीवादी शोध दृष्टि से तथ्यों को व्याख्यायित एवं

विश्लेषित किया गया है। इस शोध के लिए द्वितीयक/पूर्व प्रकाशित स्रोतों का इस्तेमाल किया गया है, जैसे कि कांग्रेस के दस्तावेज या सरकारी रिकार्ड्स एवं अन्य पुस्तकें साथ ही संबंधित विशेषज्ञों से बातचीत की गई है।

नेहरु मेमोरियल म्यूज़ियम एवं लाइब्रेरी और राष्ट्रीय अभिलेखागार (नई दिल्ली) का उपयोग किया गया है। जहाँ कांग्रेस के दस्तावेजों को विषय की मांग के अनुरूप देखा एवं अध्ययन किया गया है। जिसमें आल इंडिया कांग्रेस कमिटी के पेपर्स, इंडियन नेशनल कांग्रेस की रिपोर्ट्स, समाचार पत्र, प्रेसिडेंसिअल एड्रेस आदि शामिल हैं।

पाठ्य विभाजन-

1. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस: एक परिचय

   इस अध्याय में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का परिचय दिया गया है। 1885 से 1947 तक कांग्रेस की स्थापना से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक की कांग्रेस के सिद्धांतों, उद्देश्यों एवं नीतियों तथा कार्यक्रमों पर चर्चा की गई है। स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान भारत जिन-जिन परिस्थितियों से गुजरा एवं जो बदलाव होते रहे उनमें कांग्रेस ने किस तरह अपनी भूमिका निभाई और किस-किस तरह के कार्यक्रम चलाए, उनका विवरण इस अध्याय में दिया गया है। भारत की राजनीतिक पृष्ठभूमि में किस-किस तरह की चुनौतियां आती रहीं और किस-किस तरह की परिघटनाएं हुईं और कांग्रेस ने उनमें अपने आपको किस तरह स्थापित किया या किस तरह से राष्ट्र की उन्नति के लिए राष्ट्र की सेवा की उसको इस अध्याय में दिखाया गया है। कांग्रेस के राष्ट्रव्यापी अभियान एवं समय-समय पर कांग्रेस के विभिन्न निर्णयों की चर्चा इस अध्याय में है।

2. कांग्रेस के अधिवेशनों में महिलाओं का प्रवेश एवं उनका राजनीतिक रुझान

इस अध्याय में मुख्यतः कांग्रेस के अधिवेशनों की चर्चा की गई है। कांग्रेस के इतिहास में जो-जो अधिवेशन महत्वपूर्ण रहे हैं या जिन अधिवेशनों में महिलाओं की अधिक भूमिका रही है या महिलाओं के मुद्दों से संबंधित रहे हैं उनकी चर्चा की गई है। कांग्रेस का 1889 का मुंबई अधिवेशन जिसमें पहली बार महिला प्रतिनिधि शामिल हुईं। और बाद के अधिवेशनों में जिस तरह की भूमिका महिलाओं की रही उनकी चर्चा है। 1917 का कलकत्ता अधिवेशन, जिसकी अध्यक्षता एनी बेसेंट ने की थी और उसके बाद 1924 का बेलगांव अधिवेशन की विस्तार से चर्चा है। 1925 का कानपुर अधिवेशन जिसकी अध्यक्षता सरोजिनी नायडू ने की। उसके बाद 1931 कराची अधिवेशन 1936,37 का अधिवेशन फिर 1946 मेरठ राष्ट्रीय महासभा की चर्चा है। इन सभी अधिवेशनों की चर्चा के माध्यम से महिलाओं की कांग्रेस अधिवेशन में सहभागिता तथा कांग्रेस एवं राष्ट्रीय राजनीतिक परिदृश्य में उनकी छवि एवं परिस्थिति को उल्लेखित करने का प्रयास किया गया है।

3. कांग्रेस के नेतृत्व में हुए आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी एवं योगदान

इस अध्याय में देश में हुए राष्ट्रव्यापी जन आंदोलनों की विस्तार से चर्चा है। साथ ही आंदोलनों में महिलाओं की क्या सहभागिता रही है या किस तरह महिलाओं ने उन आंदोलनों को सफल बनाने का प्रयास किया उनके योगदान को दिखाया गया है। जैसे स्वदेशी एवं बहिष्कार आंदोलन, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन एवं भारत छोड़ो आंदोलन। साथ ही यह चर्चा की गई है कि किस तरह महात्मा गांधी ने महिलाओं को पहले मानसिक रुप से सशक्त बनाया, समाज को परिवर्तित करने के लिए कई सभाओं का आयोजन किया, लोगों की मानसिकता पर चोट किया एवं सामाजिक/सांस्कृतिक प्रतिबंधों से निकलकर बाहर आने को कहा। गांधी के पूरे योगदान को दर्शाया गया है, जिसने महिलाओं को सबल एवं सफल बनाया। साथ ही कई महिला संगठनों की चर्चा की गई है, जिन्होंने महिलाओं को छोटे स्तरों से उठाकर राजनीति

के बड़े मंच की तरफ धकेला या आने के लिए प्रेरित किया। जिसके पश्चात ही महिलाएं राजनीति में सक्रिय रुप से भागीदार हो पाईं।

4. कांग्रेस की महत्वपूर्ण महिलाएं: राजनितिक परिचय

इस अध्याय में बहुत सी महिलाओं के राजनीतिक जीवन एवं स्वतंत्रता संघर्ष के बारे में दिया गया है। जो भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रहीं, कांग्रेस से जुड़ी रहीं एवं राजनीतिक भागीदारी के तहत राष्ट्रहित में कार्य करती रहीं। इस अध्याय में अग्रलिखित महिलाओं को चित्रित किया गया है- प्रभावती देवी, अबादी बानो बेगम, कमला देवी चट्टोपाध्याय, दुर्गाबाई देशमुख, सत्यवती, मार्गरेट कजिंस, कल्पना दत्ता, कस्तूरबा गांधी, विजयलक्ष्मी पंडित, राजकुमारी अमृत कौर, अमर कौर, पुष्पा गुजराल, अनुसुइया बाई काले, मीरा बेन, खुर्शीद बहन, उषा मेहता, हंसा मेहता, सुचेता कृपलानी, अरुणा आसफ अली, कैप्टन लक्ष्मी सहगल, मंजूभाषिनी, मृदुला साराभाई, रुकमणी लक्ष्मीपति, कमला नेहरू एवं इंदिरा प्रियदर्शिनी।

5. कांग्रेस में महिलाओं की सहभागिता एवं सहभागिता की सीमाएं

इस अध्याय में यह बताया गया है कि कांग्रेस के इतने लम्बे दौर में महिलाओं ने किस तरह सहभाग किया एवं किन-किन भूमिकाओं में उन्हें एख गया या वो कौन से कामों में सहयोग करती थीं। कांग्रेस के अंतर्गत वह क्या कर सकती थीं या क्या-क्या कर रही थीं उसकी चर्चा इस अध्याय में की गई है। यह बताया गया है कि क्या महिलाओं के लिए महिला होने के नाते उनके कार्यों को सीमित किया गया।

शोध की शीमा-

इस शोध की सीमा यह है कि इसके अध्ययन के दौरान केवल हिंदी एवं अंग्रेजी के ही दस्तावेजों/पुस्तकों को शामिल किया गया है। किंतु बहुत से पत्र/दस्तावेज क्षेत्रीय भाषाओं में हैं, भाषा की अनभिज्ञता के कारण जिनका प्रयोग नहीं किया जा सका। यह शोध मात्र हिंदी और अंग्रेजी के स्रोतों पर आधारित है, जिस कारण संभवत: कुछ कमियां हो सकती हैं।